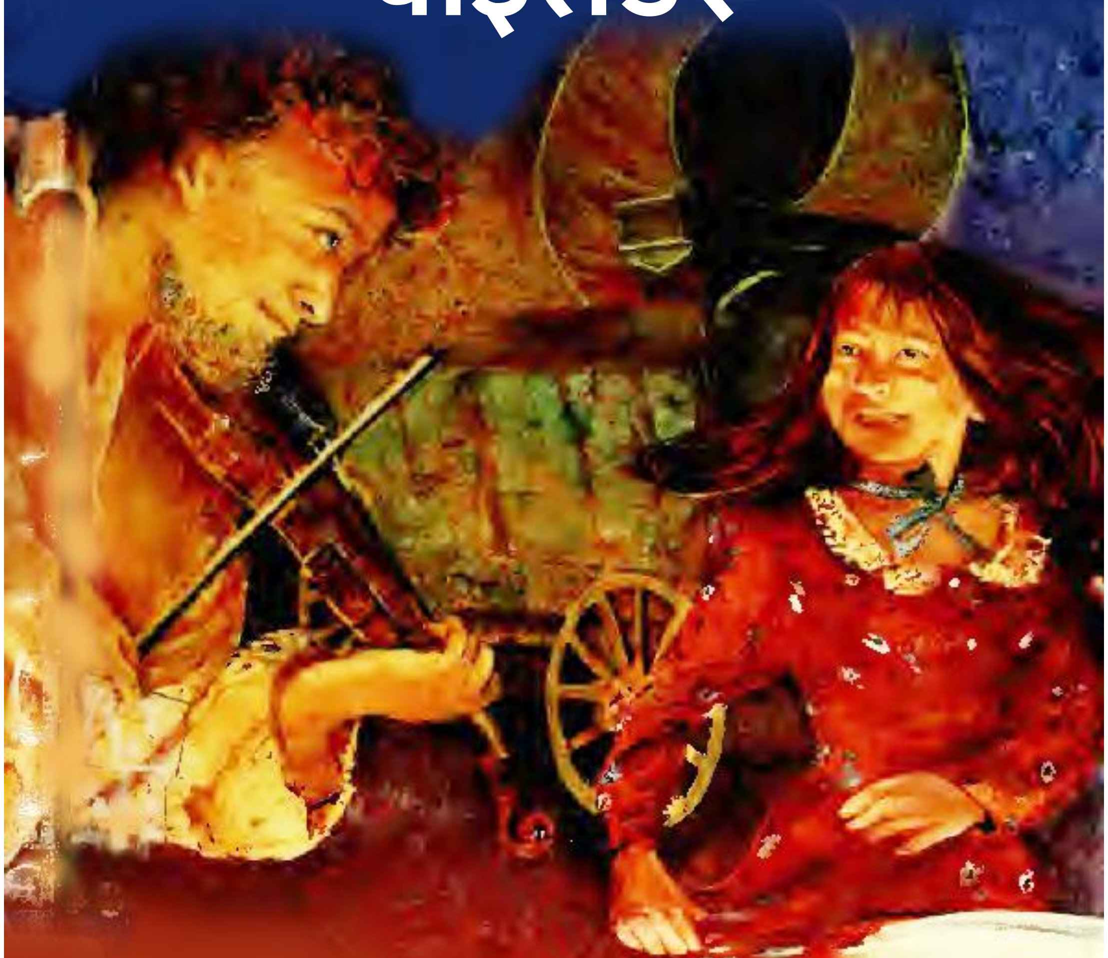
लॉरा इनगल्स वाइलडर



जिन्जर वैडसवर्थ, चित्र: शैली

हिन्दी: इंदुजी

लॉरा इनगल्स वाइलडर



जिन्जर वैडसवर्थ

चित्र: शैली

हिन्दी: इंदुजी



मिनसोटा

1874

सात साल की लॉरा झटपट

कैनवास से ढकी हुई वैगन में चढ़ गई.

उसकी बड़ी बहन, मैरी, उसके पास बैठ गई.

उसकी छोटी बहन, कैर्री, माँ की गोद में थी.

पिता ने लगाम संभाली और घोड़े चलने लगे

धूल भरे रास्ते पर वैगन आगे बढ़ने लगी.



दिन प्रतिदिन उनकी वैगन

पश्चिम की ओर आगे चलती जा रही थी.

माँ का खाना बनाने का बड़ा बर्तन

वैगन से बार-बार टकरा रहा था.

वैगन का ऊपरी कैनवास हवा में फड़फड़ा रहा था.

मैरी, लॉरा और कैर्री वैगन के अंदर

अपनी गुड़ियों के साथ खेल रही थीं.

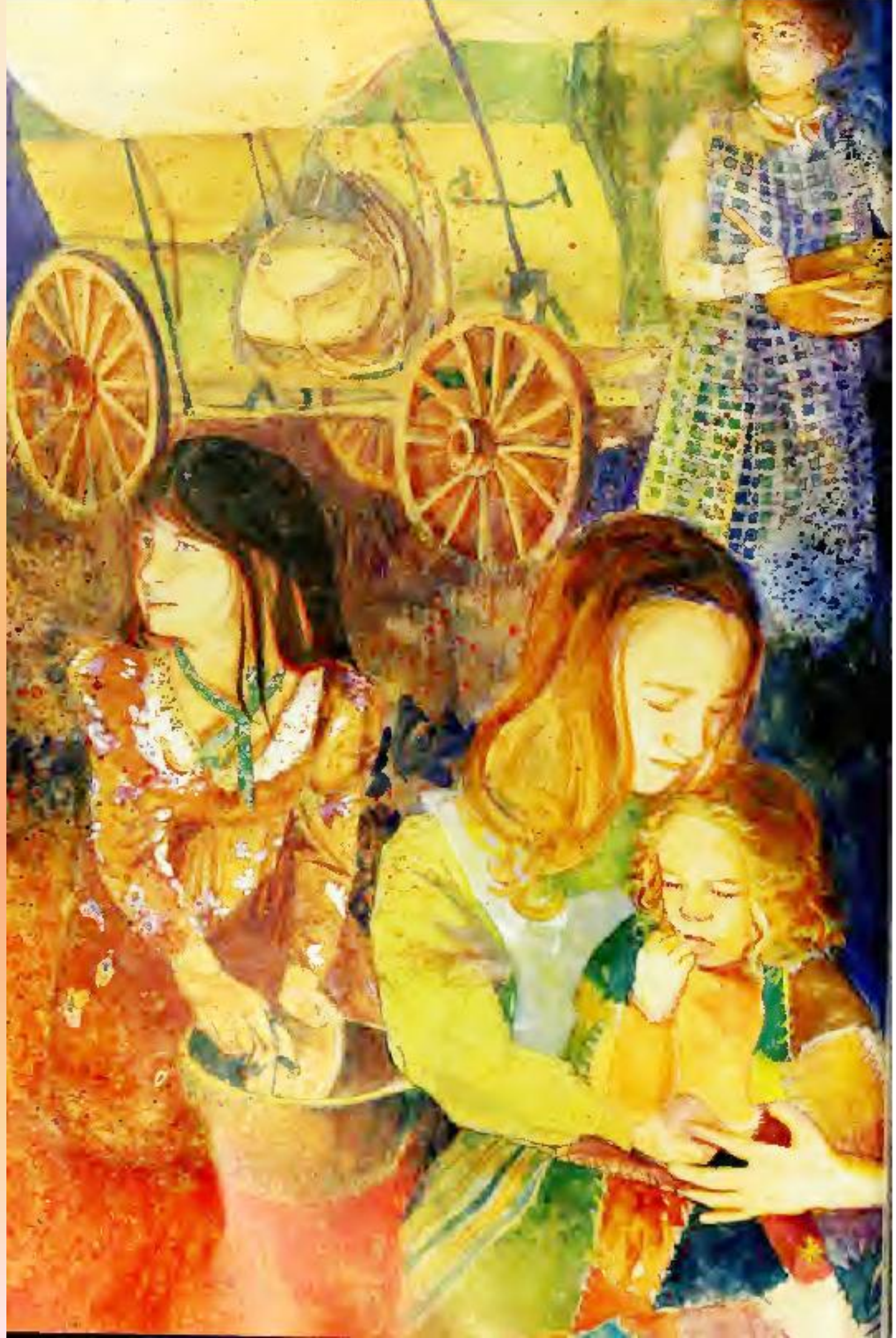


उनका कुत्ता, जैक, गाड़ी के पीछे चल रहा था.

लॉरा को वैगन से बाहर देखना अच्छा लगता था.

घास के विशाल मैदान पर आकाश

एक नीले बाउल समान फैला हुआ था.





रात के समय इनग्लस परिवार किसी
छोटी नदी के पास रुक जाता था.
माँ आग जला कर मांस और तरकारी पकाती थी.
खाने के बाद लॉरा प्लेट और कप
साफ करती और उन्हें समेट कर रख देती थी.
पिता अपनी राइफल पास ही रखते थे.
अगर उनके कैंप के पास कोई भेड़िया
आ जाता तो वह राइफल का उपयोग करते थे.
जब वह आग के आसपास बैठते तो
पिता फिड्डल बजाते और वह सब
एक साथ गाते थे.

लॉरा पिता से कोई कहानी सुनाने के लिए कहती थी.

पिता अपनी बिखरी हुई दाढ़ी खुजलाते थे.

लॉरा को लगता वह किसी

विशाल भालू की कहानी सुनाएंगे.

लेकिन वह तो उसके दादा और

एक चीते की कहानी सुनाने लगे.

यह एक डरावनी कहानी थी इसलिए लॉरा की

मनपसंद कहानियों में से एक कहानी थी.

जब भी पिता यह कहानी सुनाते थे

वह डर से कांप जाती थी.



लॉरा को पिता की कहानियां अच्छी लगती थीं.

उसने वो कहानियां कई बार सुनी थीं.

शायद कहानी का अंतिम भाग आज वह स्वयं

सुना सकती थी.

अंत में, हमेशा की तरह दादा चीते से बच निकलते थे.

पिता के समान लॉरा भी अच्छी कहानीकार थी.





डकोटा

1880

लॉरा ने झोंपड़ी से बाहर झांक कर देखा.

बाहर मैदान में घास हवा में नाचती सी दिखाई दी.

लॉरा ने जल्दी-जल्दी घर का काम पूरा किया.

उसने रजाई को उस बिस्तर पर संभालकर रखा

जिस पर मैरी के साथ वह सोती थी.

फिर उसने कैर्री ओर नन्ही ग्रेस के लिए

नाश्ता तैयार किया.

उसने फटी हुई चद्दर की सिलाई की.

लेकिन सिलना उसे पसंद नहीं था.



आखिरकार घर का सारा काम निपट गया.

लॉरा झटपट घर से बाहर आई.

नंगे पांव वह घास पर दौड़ने लगी.

धूप से बचाव करने वाली टोपी उसने उतार दी.

चेहरे पर उसने सूर्य की गर्मी महसूस की.

उसे आशा थी कि ऐसे व्यवहार के लिए

माँ उसे न डांटेंगी.





वह अपनी गाय, एलीन, का वहां ले आई

जहाँ ताज़ा घास थी. फिर घास काटने में उसने

पिता की मदद की. सुखाने के लिए दोनों ने

घास को ज़मीन पर फैला दिया.

जो घास सूख गई थी उसके बंडल बना लिए.

उन बंडलों को उठा कर वह गोदाम में ले आए.

यह सूखी घास सर्दी के दिनों में
गायों को खिलाने में काम आएगी.
लॉरा अधिक लंबी न थी पर वह ताकतवर थी.
फार्म में मेहनत का काम करने में पिता की
मदद करना उसे पसंद था.



अंत में लॉरा ने बड़े जग में पानी भरा और
उसे उठा कर घर के अंदर ले आई.
सफाई करते समय मैरी गीत गा रही थी.
लॉरा के लिए यह भूलना सरल था कि
मैरी अब देख न सकती थी.





लॉरा और मेरी ने धूप से बचने वाली टोपियाँ पहनी और बाँहों में बाहें डाले, घास के मैदान के बीच, भैंसों के पुराने रास्ते पर, चलने लगीं. मैरी अपनी दृष्टिहीनता का बहादुरी से सामना कर रही थी. इसलिए लॉरा भी बहादुरी दिखा रही थी. उसने पिता को आश्वासन दिया था कि वह मैरी की आँखें बन जाएगी.

लॉरा मैरी को वह सब बताती जो वह देख रही होती.

चलते-चलते लॉरा ने गुलाबी फूलों के बारे में बताया जो घास के मैदान में एक गलीचे सामान फैले थे.

नीले आकाश पर बादल जंगली घोड़ों समान दौड़ रहे थे.

लॉरा अपने शब्दों से हर वस्तु का चित्र बना देती थी.



लॉरा जिस चीज़ का भी वर्णन करती थी

मैरी मन में उसका चित्र बना लेती.

उसने लॉरा से कहा कि बड़े होकर

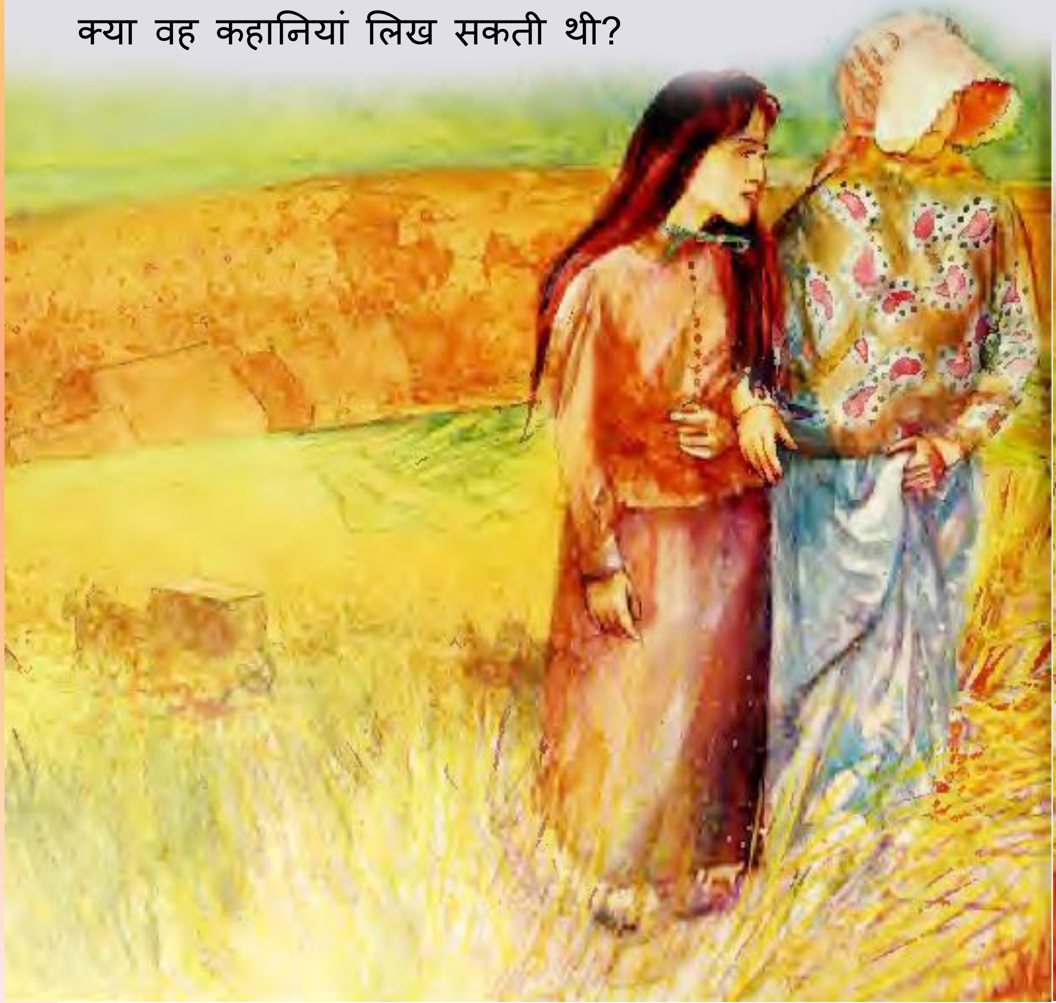
उसे एक किताब लिखनी चाहिए.

लॉरा हँस पड़ी.

उसे कहानियां बनाना अच्छा लगता था

लेकिन एक किताब लिखना?

क्या वह कहानियां लिख सकती थी?



एक दिन, मैरी ने कहा, घास के मैदान

पर घर बन जाएंगे, नगर बस जाएंगे.

भैंसों के रास्तों की जगह मैदान

के आर-पार सड़कें दिखाई देंगी.

मैरी ने लॉरा से कहा कि वह पिता

की सुनाई कहानियां लिखे.

लॉरा फिर हँस दी,

इनग्लस परिवार की कहानियां

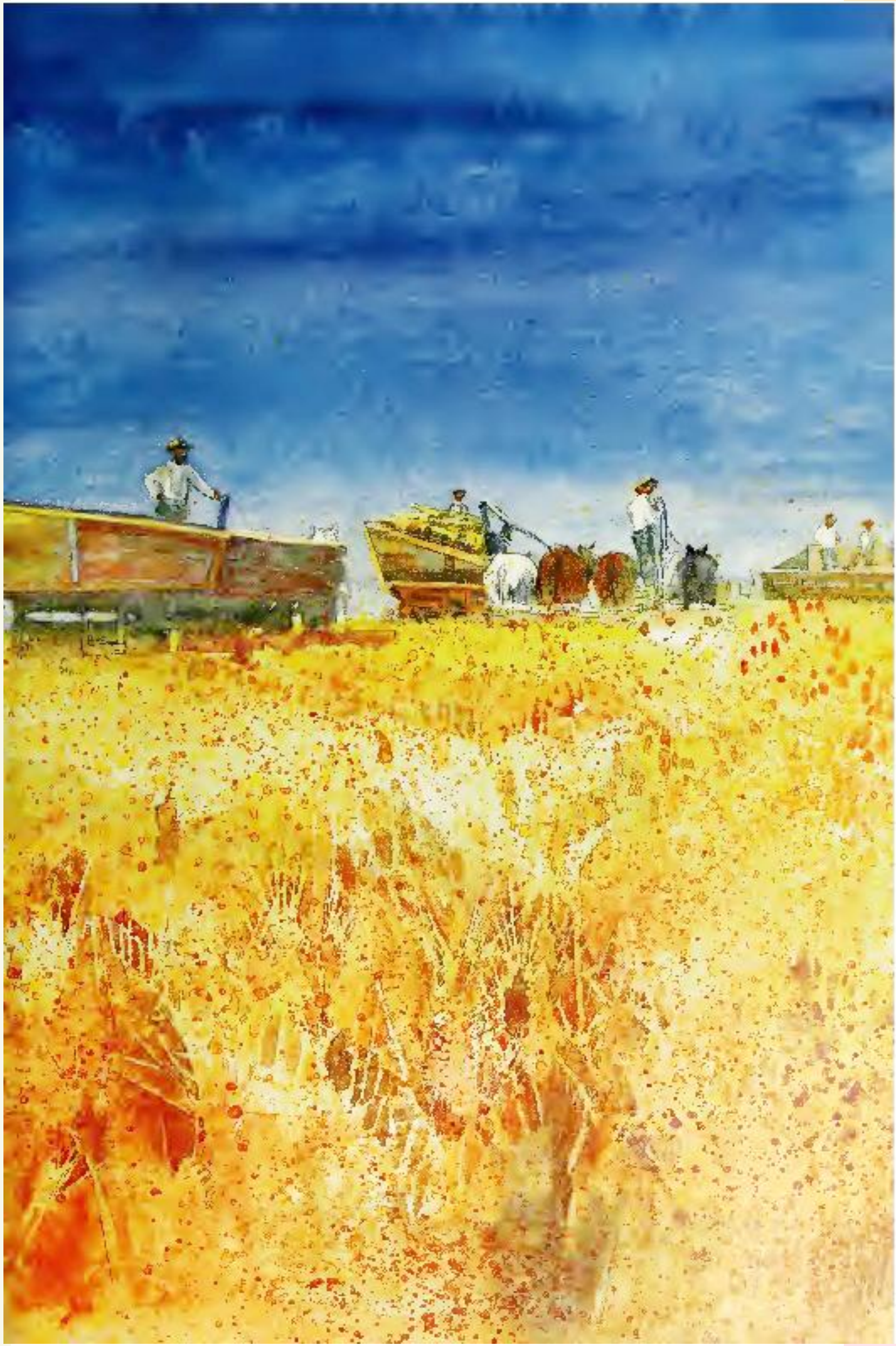
कौन सुनना चाहेगा?





दक्षिण डकोटा से मिस्सुरी
1880 और 1890 के दशक

जब लॉरा 18 वर्ष की हुई तो अल्मांज़ो वाइलडर
के साथ उसका विवाह हो गया.
उसके पास एक बड़ा गेहूँ का फार्म था.
किसान की पत्नी के रूप में लारॉ को कड़ी मेहनत
करनी पड़ती थी लेकिन वह प्रसन्न थी.
लॉरा की एक बेटी हुई,
लॉरा और अल्मांज़ों ने उसका नाम रोज़ रखा.



गेहूँ के पौधे लगाने में लॉरा ने अल्मांज़ों की मदद की.
शीघ्र ही ज़मीन से नन्हे अंकुर बाहर आने लगे.
थोड़े ही समय में यह पौधे बड़े हो गए और
हवा में लहराने लगे.
गेहूँ को पकने के लिए धूप की आवश्यकता होती है.
लेकिन उस साल ओलावृष्टि में सारी फसल बरबाद हो गई.



अगली गर्मियों में
घास का मैदान गर्म और शुष्क था.
लॉरा के तंदूर के समान वायु भी गर्म थी.
वर्षा न होने के कारण गेहूँ के पौधे भूरे रंग
के हो गए और फिर खेतों में ही सूख गए.





उसके अगले वर्ष

टिड्डी दल ने गेहूँ के पौधे बरबाद कर दिए.

बगीचे में लगी सारी सब्ज़ियां कीड़े खा गए.

फिर लॉरा और अल्मांज़ों के घर में आग लग गई.

लेकिन लॉरा ने इन मुसीबतों का सामना

साहस के साथ करने का प्रयास किया.

लॉरा और अल्मांज़ों ने मिस्सूरी जाने के निर्णय लिया.

दोनों अपना जीवन नए सिरे से शुरु करना चाहते थे.

उन्होंने एक गाड़ी में अपने कपड़े और

बिस्तर और बर्तन रख लिए.

सात साल की रोज़ भी गाड़ी में बैठ गई.

लॉरा ने अपने माता-पिता और बहनों को गले लगाया

और उन्हें अलविदा कहा.

सब की आँखों से आँसू बह रहे थे. उन्होंने वचन दिया

की पत्र लिखेंगे.





धूल भरे रास्ते पर दो घोड़े
ढकी हुई गाड़ी को खींचने लगे.
यात्रा लंबी थी. समय बिताने के लिए
लॉरा और अल्मांज़ों गाने गाते थे.
रोज़ अपनी माँ से कहानियां सुनाने के लिए कहती.
लॉरा उसे कहानियां सुनाती थी.
उसने वह कहानी सुनाई जब नन्ही ग्रेस
मैदान की ऊँची घास में खो गई थी.
विसकॉसन के बिग वुड्स में क्रिसमस
मनाने की कहानी लारॉ ने सुनाई.





रात के खाने के बाद लॉरा आग के पास बैठकर
अपनी नोटबुक और पेंसिल निकालती
और अपनी यात्रा का वर्णन लिखती.
जो फार्म उसने देखे थे उनके बारे में लिखती.

घास के विशाल मैदान के बीच से
एक ओर से दूसरी ओर आती-जाती
बंद गाड़ियों के बारे में वह लिखती.
खोज में निकले अन्य लोग भी
नए फार्म तलाश रहे थे.

45 दिन की यात्रा के बाद

वाइलडर परिवार मैंसफील्ड मिस्सूरी पहुँचा.

वहाँ उन्होंने नगर के निकट एक वन

में अपना कैंप लगाया.

फिर खरीदने के लिए उन्होंने

एक छोटा फार्म खोजा.

फार्म के अंदर पेड़ों से भरी पहाड़ियां थीं.

हर जगह चट्टानें थीं.

लॉरा ने अपने फार्म का नाम रखा, रॉकी रिज.

वहाँ वह एक कमरे के केबिन में रहने लगे.

लॉरा ने केबिन में लगे मकड़ी के जाले,

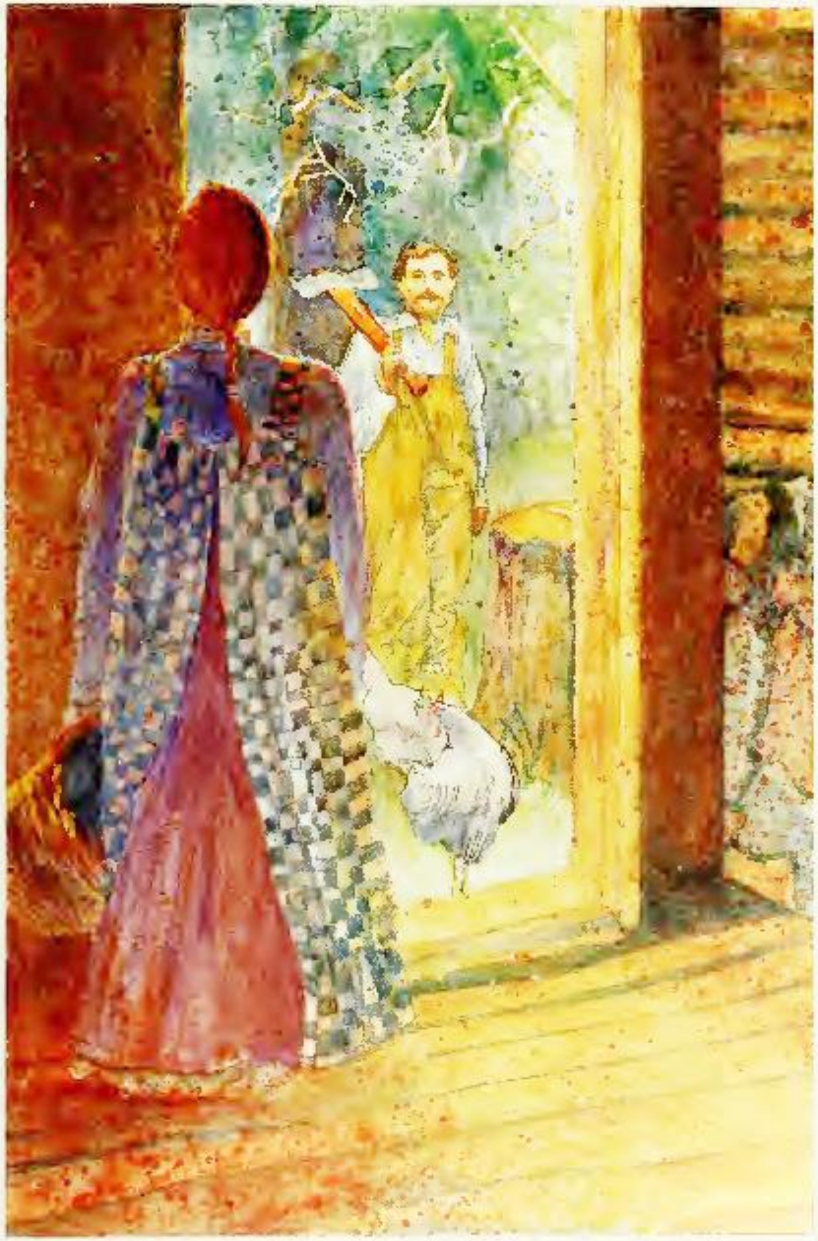
बिखरे हुए पत्ते और चूहों के घोंसले हटाए.

अपनी नोट-बुक्स को सुरक्षित रखने के लिए

एक ट्रंक में रख दिया.

किसी दिन वह अपने

नए जीवन के बारे में लिखेगी.



लॉरा और अल्मांज़ों मिलकर
एक टीम की तरह काम करते थे.
उन्होंने कुछ पेड़ काटे.
अल्मांज़ों ने गाड़ी में भरकर लकड़ी
नगर में 75 सेंट में बेच दी.



लॉरा ने कुछ अंडे और बाल्टी भर जंगली बेर
10 सेंट में बेचे.
लंबे समय के बाद उनके पास इतने पैसे थे.
अपना काम करते समय
वह खुशी से सीटी बजाती थी





सैंन फ्रैंस्सिको
1915

जब लॉरा 48 वर्ष की थी, वह रेल में बैठ कर
मिस्सूरी से सैंन फ्रैंस्सिको, कैलिफोर्निया आ गई.
वह अपनी बेटी रोज़ से मिलने को उतावली थी.
बेटी अब वयस्क हो गई थी
और एक लेखक बन गई थी.



लॉरा अभी भी एक किसान की पत्नी थी.

लेकिन वह समाचारपत्रों के लिए कहानियां भी लिखती थी.

कैलिफोर्निया जाने वाली रेल बहुत तेज़ गति से चल रही थी.

वर्षों पहले, एक बंद गाड़ी में पश्चिम जाने की
यात्रा की स्मृति लारॉ के मन में उभरी.

घास के मैदान को पार करने में गाड़ी को
कई सप्ताह लग गए थे.

लेकिन रेल द्वारा कैलिफोर्निया
पहुँचने में कुछ दिन ही लगे.

लारॉ और रोज़ प्रशांत महासागर
के पानी में धीरे-धीरे चले.
वह रेडवुड पेड़ों के झुरमुट में घूमे.
स्ट्रीट-कार में बैठ कर वह ऊँची
पहाड़ियों के ऊपर-नीचे गए.
सैंन फ्रैंस्सिको एक सुंदर नगर था.
लेकिन लारॉ को अल्मांज़ों की कमी खल रही थी.
लगभग हर दिन वह अल्मांज़ों को पत्र लिखती.



लारॉ हर चीज़ का वर्णन वैसा ही लिखने का
प्रयास करती जैसा उसने देखा होता था.
रोज़ की छोटी लाल कार में घूमने का
वर्णन उसने लिखा.
सागर पर सूर्यास्त को देखने का
अनुभव उसने लिखा.
अल्मांज़ों लारॉ के हर पत्र को संभाल कर रखता,
एक धागे से बांध कर वह उन पत्रों को
एक बॉक्स में रख देता था.





रॉकी रिज फार्म
1930 का दशक

लारॉ को अहसास भी न हुआ और
वह साठ वर्ष की हो गई.
उसके बाल सफेद हो गए पर वह
अपने को वृद्ध महसूस न कर रही थी.
व्यस्त रहने के बावजूद अपने आरंभ के
दिनों के बारे में वह लिखना चाहती थी.
लारॉ ने तंदूर में ब्रेड पकने के लिए रखी और
फिर अपने डेस्क पर बैठ गई.
वह कहाँ से लिखना शुरु करे? उसने सोचा.
बिग वुड्स से?
प्लम क्रीक से?
डकोटा से?



लारॉ ने अपने पिता और उनकी हँसी के बारे में सोचा.

अपनी शांत और मृदुल माँ की कमी उसे महसूस हुई.

वह कहानियां अच्छे ढंग से सुना सकती थी

लेकिन अपने बचपन के दिनों की कहानियां

लिखने का प्रयास उसने कभी न किया था.

लारॉ ने पेंसिल उठाई

और बिग वुड्स के बारे में लिखने लगी.

लारॉ ने उन दो विशाल ओक के पेड़ों के बारे में सोचा
जिन की छाया से उनका घर ढका रहता था.
उन पेड़ों के नीचे मैरी और उसने कई बार
गुड़ियों के साथ चाय पार्टी का खेल खेला था.
घर के चारों ओर और दूर-दूर तक पेड़ ही पेड़ थे.
लारॉ उस कुल्हाड़ी की आवाज़ सुन सकती थी
जिससे पिता पेड़ काटते थे.
लारॉ ने अन्य छोटे घरों के बारे में लिखा.
एक घर छोटी नदी के पास था.
दूसरा घर झील के किनारे पर था.
लारॉ अभी भी घर के सारे काम स्वयं करती थी और
फार्म में अल्मांज़ों की मदद भी करती थी.
लेकिन जब भी उसे समय मिलता वह लिखने बैठ जाती.
कई बार आधी रात को उसे कोई कहानी याद आती.
वह झट से उठ जाती और
उसी समय अपने डेस्क पर बैठ कर लिखने लगती.





कहानी पूरी लिखने के बाद

डाक द्वारा रोज़ के पास भेज देती थी.

रोज़ वह कहानियां एक प्रकाशक के भेज देती.

प्रकाशक को कहानियां अच्छी लगतीं.

लेकिन वह उन में कुछ बदलाव चाहते थे.

लारॉ फिर अपने डेस्क पर बैठ जाती थी.

इस बार उसने अपने घर की स्मृतियों के बारे में लिखा.

"एक समय की बात है, साठ वर्ष पहले

एक लड़की, बिग वुड्स, विस्कॉसन, में स्थित

लकड़ी के एक छोटे से घर में रहती थी."



“बिग वुड्स में एक छोटा घर” (Little House in the Big Woods) नामक उसकी किताब जब प्रकाशित हुई लारॉ पैंसठ वर्ष की थी.

उसने प्रसिद्ध होने का सपना कभी न देखा था.

लेकिन उसकी उम्मीद थी कि कुछ बच्चे बिग वुड्स में उसके कारनामों को अवश्य पढ़ेंगे





बहुत बच्चों को उसकी किताब अच्छी लगी.

अमरीका के कई जगहों से पाठकों ने लारॉ को पत्र लिखे.

वह जानने को उत्सुक थे कि आगे क्या हुआ.

वह उसके पिता, उसकी माँ, मैरी, लारॉ, कैरी और ग्रेस के बारे में जानना चाहते थे.

वह अल्मांज़ों के बारे में भी जानना चाहते थे.

कहानी लिखने के लिए लारॉ फिर से

डेस्क पर बैठ गई. वह जानती थी कि नई कहानी में

और अगली कहानियों में उसे क्या लिखना था.

हर कहानी एक नए घर के बारे में होगी.

वह बहुत घरों में रही थी.

लारॉ ने फिर से पेंसिल उठाई.



लॉरा इनग्लस वाइलडर



लारॉ ने सात किताबें लिखीं. अल्मांज़ों के साथ वह आनंद से अपने फार्म पर रही. हर दिन अपने कुत्ते, ओल्ड बैन, के साथ आधा मील चल कर वह अपने पत्र लेने डाकघर आती थी. अपने पाठकों के पत्र एक टोकरी में भरकर वह घर लौटती थी. अधिकांश पत्र उन बच्चों के होते थे जिन्होंने उसकी किताबें पढ़ी होती थीं. लारॉ हर पत्र का जवाब देती थी.

90 वर्ष की आयु में लारॉ का देहांत 1957 में हुआ. लेकिन लोग उसे भूल नहीं सकते. उसके घर संग्रहालयों के रूप में संरक्षित हैं.

लाखों बच्चे अभी भी लारॉ के शुरु के दिनों के कारनामों की कहानियां बड़े चाव से पढ़ते हैं.